


---

# Mayaramabhaktakrita Shri Hari Stuti

——  
भयारामभक्तकृता श्रीहरिस्तुतिः

——  
Document Information



---

Text title : Mayaramabhaktakrita Shri Hari Stuti

File name : mayArAmabhaTTakRRitAshrIharistutiH.itx

Category : vishhnu, svAminArAyaNa, krishna, stuti, aShTaka

Location : doc\_vishhnu

Author : mayArAmabhaTTa

Acknowledge-Permission: Swaminarayan Sampradaya

Latest update : August 8, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---


Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 9, 2024

*sanskritdocuments.org*

---



---

## Mayaramabhaktakrita Shri Hari Stuti

---

### मयारामभट्टकृता श्रीहरिस्तुतिः

---



(वसन्ततिलकम्)

तेजोमये परमधामनि राजमानः

कन्दर्पको टिकमनीयसुभद्ररूपः ।

यो नैजमुक्तागणसेवितपादपद्मस्त्वां

धर्मनन्दनमहं प्रणामामि नित्यम् ॥ १ ॥

जेगीयमानचरितं श्रुतिशास्त्रवारैः

सर्वेश्वरं य परिपूर्णाविबोधमाधम् ।

ब्रह्माण्डकोटिमनिशं परिपालयन्तं

त्वां धर्मनन्दनमहं प्रणामामि नित्यम् ॥ २ ॥

नैकात्ममुक्तिमनुचिन्तयमानमीशं

नैजेच्छया क्षितितले धृतमर्त्यानाटयम् ।

भक्त्यात्मजं परमवल्लभवर्णिविषं

त्वां धर्मनन्दनमहं प्रणामामि नित्यम् ॥ ३ ॥

मुक्तिप्रदं सकलमङ्गलमङ्गलञ्च

योगीन्द्रचित्तविनिवासपदं परेशम् ।

संसारघोरदृष्टितार्तिहरं मडेशं

त्वां धर्मनन्दनमहं प्रणामामि नित्यम् ॥ ४ ॥

ध्यानं यदीयममलं तनुते प्रकाशं

यद्दर्शनं जनयते परमं प्रभावम् ।

यत्कीर्तनं कलयते यरमाभ्रशान्तिं

त्वां धर्मनन्दनमहं प्रणामामि नित्यम् ॥ ५ ॥

भूतं ददाति सततं वयनामृतैर्यः

शिक्षां प्रदाय नियमैर्वितनोति धर्मम् ।

लोकोत्तरस्वयश्चित्तैः शमयत्यभद्रं

त्वां धर्मनन्दनमहं प्रणामामि नित्यम् ॥ ६ ॥

तोष्यमानगुणाराशिममर्त्यवृन्दैः

सर्वात्मकं निष्कलकाराकाराण्य ।

श्रीधीधृतिप्रगतिनीतिथितिप्रकाशं

त्वां धर्मनन्दनमहं प्रणामामि नित्यम् ॥ ७ ॥

यन्नाम वर्तत षडा कलिकल्मषघ्नं

नैराश्यकर्मनिमग्नप्रतारकण्य ।


कल्पद्रुमोपममधौघडरप्रभावं

त्वां धर्मनन्दनमहं प्रणामामि नित्यम् ॥ ८ ॥


एति श्रीस्वामिनारायणबापायश्चित्रामृतसागरे तृतीयप्रवाले

द्विधत्वारिंशत्तमे तरङ्गे मयारामभट्टकृता श्रीहरिस्तुतिः सम्पूर्णा ।

---

——  
*Mayaramabhattachakrita Shri Hari Stuti*

pdf was typeset on August 9, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

